समालोचना के विविध स्वर

–प्रो. संजय एल. मादार

विभागाध्यक्ष

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,

(विश्वविद्यालय विभाग)

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, कर्नाटक

डी.सी. कंपौंड धारवाड़ - 580 001

शारदा पब्लिकेशन

दिल्ली

Published by:
शारदा पब्लिकेशन
A-9/31, दयालपुर
दिल्ली-110094
मोबाइल : 09971603248, 07838572923
ई-मेल: shardapublication12@gmail.com

प्रो. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
(विश्वविद्यालय विभाग) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
कर्नाटक, डी.सी. कंपौंड धारवाड़ - 580001
मोबाईल – 9945664379
ई-मेल – prof.sanjaymadar@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN: 978-81-940366-7-8

₹ 800.00

Printed at
बालाजी ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

समर्पण

इस ग्रंथ के लिए सहयोग देने वाले समस्त हिंदी प्रेमियों को.....

10. अब्दुल बिस्मिल्ला की कहानियों में चित्रित धर्मिक जड़ता और सांप्रदायिक समस्या 82
रूपधर गोमांगों

11. अमरकांत की कहानियों में राजनीतिक समस्याएँ 90
डॉ. के. सोनिया

12. हिंदी कहानियों में मूल्य–विघटन 96
डॉ. विजय पायेल

13. हिंदी के समकालीन महिला कथा साहित्य में आस्था और मूल्य 102
डॉ. हेमा नारायणन

14. 'वैष्णवी' कहानी में बाल-विधवा की व्यथा 107
निशा मुरलीधरन

15. मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में नारी विमर्श 111
डॉ. सुनीता शर्मा

16. स्वतंत्रता के बाद भारतीय मुसलमानों की अवस्था : समकालीन हिंदी उपन्यास के संदर्भ में 120
डॉ. श्रीविद्या एन.टी.

17. विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों में नारी उत्पीड़न की समस्याएँ 126
डॉ. रॉय जोसपफ

18. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में मानवतावाद 133
डॉ. सौ. विद्या शशिशेखर शिंदे

19. देश विभाजन की त्रासदी 'झूठा सच' के संदर्भ में 140
डॉ. परशुराम ग. मालगे

20. कथा के दर्पण में आत्मकथा की स्वरूपात्मक प्रतिच्छवि 144
डॉ. किरण ग्रोवर

21. विष्णु प्रभाकर का उपन्यास साहित्य 159
डॉ. हाके एम.आर.

22. मानव की छटी उंगली मोबाइल 164
आर. अरुणा

23. जयनंदन का व्यक्तित्व 169
ममताश्री के.

नाटक-खंड

24. साहित्य की विध में व्यंग्य नाटक 179
सौ. प्रिया मेश्राम

25. डॉ. देवराज पथिक के नाटकों में कथा प्रयोग की नवीनता 195
हुकम सिंह

26. कालजयी काव्य नाटक अंधायुग 202
डॉ. शान्ति जी.

27. 'उलगुलान' का नायक बिरसा मुंडा : एक आदर्श नेता 207
डॉ. पूर्णिमा बनर्जी

28. 'रीढ की हड्डी' में अभिव्यक्त नारी विद्रोह 213
डॉ. (श्रीमती) नलिनी डी. कुलकर्णी

अन्य समीक्षाएँ

29. अकादमिक अनुसंधान का व्यवहारिक आप्लावन 219
डॉ. डी. एन. प्रसाद

30. संस्कृति और पर्यावरण 225
सहा. प्रा. डॉ. विजय वाघ

31. हिंदी नाम, संबोधन–शब्दों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन 231
श्रीमती शिल्पी वर्मा

32. गोविंद मिश्र के यात्रा साहित्य में परिवेश 247
दिप्ती दिपकांत च्याति हळदोणकर

33. संजीव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 258
डॉ. आर. एन. शीला

34. अमृता प्रीतम का व्यक्तित्व एक नई सामाजिक व्यवस्था की बुनियाद 269
संतोष मीणा

6. नमिता मैंगी : आर्य समाज की हिंदी आत्मकथा साहित्य को योगदान, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 39
7. नारायण विष्णु दत्त शर्मा : हिंदी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978, पृ. 57
8. भगवान भारत भारद्वाज : हिंदी जीवनी साहित्य सिद्धांत और अध्ययन, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978, पृ. 61
9. कमलेश सिंह : हिंदी आत्मकथा : स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989, पृ. 44
10. विनीता अग्रवाल : हिंदी आत्मकथाएँ : सिद्धांत एवं स्वरूप विश्लेषण, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989, पृ. 67
11. विश्वबंधु 'व्यथित' : हिंदी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 1989, पृ. 72
12. हरिवंश राय बच्चन : दशद्वार से सोपान तक, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली, 1985, पृ. 42
13. नमिता मैंगी : आर्य समाज का हिंदी आत्मकथा साहित्य को योगदान, पृ. 55
14. सुमित्रानंदन पंत : साठ वर्ष और अन्य निबंध, पृ. 63
15. हरिवंश राय बच्चन : क्या भूलूँ क्या याद करूँ, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली, 1969, पृ. 45
16. सुधा राठी : हिंदी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में रचना प्रक्रिया का विश्लेषण, पृ. 47
17. विश्वबंधु 'व्यथित' : हिंदी का आत्मकथा साहित्य, पृ. 76
18. सुधा राठी : हिंदी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में रचना प्रक्रिया का विश्लेषण, पृ. 49
19. हरिवंशराय बच्चन : क्या भूलूँ क्या याद करूँ, भूमिका।
20. देवेन्द्र सत्यार्थी : चाँद सूरज के वीरन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1952, पृ. 76
21. सुधा राठी : हिंदी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में रचना प्रक्रिया का विश्लेषण, पृ. 274
22. वियोगी हरि : मेरा जीवन प्रवाह, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 1967 दो शब्द।
23. बनारसीदास जैन : अर्द्धकथानक, स. नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रचनाकार, बम्बई, 1943, पृ. 167
24. सुधा राठी : हिंदी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में रचना प्रक्रिया का विश्लेषण, पृ. 276

21

विष्णु प्रभाकर का उपन्यास साहित्य

–डॉ. हाके एम. आर.

विष्णु प्रभाकर जी ने अपने उपन्यासों में समाज को जिन अनेक समस्याओं पर लेखनी चलाई है, ये सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक संवेदनाओं से संबंद्ध हैं। सामाजिक समस्याओं में परिवार, विवाह, पीढ़ीगत संघर्ष नारी और उससे संबंधित अनेक समस्याओं का समावेश है। विष्णु जी ने अपनी सकारात्मक सोच द्वारा कई सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया है। विष्णु प्रभाकर के निम्नलिखित उपन्यास हैं–

निशिकांत : मृत रुढ़ियों से मुक्ति का दस्तावेज

लेखन क्रम की दृष्टि से 'निशिकांत' विष्णु प्रभाकर का प्रथम उपन्यास है, जो कि 1955 में प्रकाशित हुआ था। मृत रुढ़ियों से मुक्ति की चाह इस उपन्यास के शब्द-शब्द में व्याप्त है। यह उपन्यास निशिकांत नामक एक मध्यम वर्ग के नायक की गाथा है, जो दफ्तर में क्लर्क है। वह देश और समाज के लिए अपना जीवन अर्पित करना चाहता है।

उपन्यास के समस्त पात्र इस परिवेश के प्रति चिंतित भी हैं और उसके समक्ष अवश्य ही है। आए दिन सांप्रदायिक दंगे होते रहते हैं ब्रिटिश सरकार की ओर से सुलह सफाई के प्रयास होते रहते हैं। हिंदू- मुस्लिम समस्या के साथ एक अन्य विकट समस्या जाति-पाति या छुआछूत की है, उसे भी 'निशिकांत' में कई स्थनों पर उठाया गया हैं इसके लिए विष्णु जी ने दो ऐसे पात्र सृजित किए हैं जो मुसलमान से शुद्ध होकर हिंदू बन जाते हैं, "सांझ का जैसे ही मैंने पानी पीने का घड़ा उठाकर अंदर रखा तो वह (मालिक) एकबारगी लाल-पीले हो उठे, तूने यह क्या किया बे। हिंदू बन गया तो क्या हमारा धर्म बिगाड़ेगा। निकल जा यहाँ से। खाने को नहीं मिलता, हिंदू बन जाते हैं।"[1]

और इसी तरह धर्म परिवर्तन करके हिंदू बनी कंपाउंडर पत्नी नायक से पूछती है, "आप खा लेते हैं, पर आप ही क्या दुनिया है? अकेला चना क्या भाड़ फोड़ता है?"[2]

हिंदुओं में दमघोटू अस्पृश्यता का माहौल है। विवाह के सख्त नियम हैं। चरित्र के नाम पर स्त्रियों के लिए पुरुषों के साथ बैठना, उठना, बोलना-चालना वर्जित है। इससे उनका शील नष्ट होता है। विधवा को विवाह की अनुमति नहीं है। उससे कदम-कदम

पर सदाचरण का प्रमाण-पत्र माँगा जाता है। इन्हीं परिस्थितियों ने कांत को नायक बनाने के लिए प्रेरित किया है। किंतु उसका व्यक्तित्व क्रांतिकारी सुधारक होने तक सीमित रहता है। वह संयमों, बौद्धिक, कर्मठ एवं संवेदनशील होते हुए कायर और नपुंसक बना रहता है। स्थान-स्थान पर वह अपनी कायरता का परिचय देता है। कमला निशिकांत को समझाती है कि, "संस्कारों की दासता से मुक्ति के लिए विद्रोह आवश्यक है। नहीं तो ज्ञान को वह नपुंसक बना देगी।"[3] यही नहीं कमला निशिकांत के अंतर्मन को उद्वेलित करते हुए कहती है, "आप इतना लिखते हैं। क्या है, क्या होना चाहिए, सबकुछ बताते हैं। क्रांति आपको प्रिय है। पर ये बातें आपके जीवन में कही नहीं। छाया भी नहीं क्यों?"[4]

कमला के रूप में विष्णु प्रभाकर ने हिंदी उपन्यास को एक ऐसी सशक्त विधवा नारी दी है, जो समाज से सीधे भिड़कर उसके कठोरातिकठोर प्रहारों को झेलती जाती है, उसके आगे झुकती भी नहीं, टूटती भी नहीं। कमला के चरित्र में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समाज की प्रतिगामी शक्तियों से जूझने की शक्ति उसे लेखक की आदर्शवादिता से नहीं मिली। उपन्यास का नायक निशिकांत है, लेकिन उसे मृत रुढ़ियों से मुक्ति दिलाने वाली कमला है और निशिकांत के चरित्र से अधिक कमला के चरित्र में कसावट है। निशिकांत के इस छोटे से संवाद में कितना बड़ा सत्य उजागर हुआ है, "हर कहीं हिंदू है, मुसलमान है, पर मनुष्य आज कहीं नहीं है।"[5] इस उपन्यास में लेखक ने मध्यवर्गीय नारी की समस्याओं को केवल पारिवारिक संदर्भों में ही नहीं बल्कि पूरे देश और समाज के हवाले से उठाया गया है। यह इस उपन्यास की एक बड़ी सफलता है जो हमारा ध्यान सीधे आकृष्ट करती है।

तट के बंधन : मध्यवर्गीय नारियों की संघर्ष-गाथा

'तट के बंधन' विष्णु प्रभाकर का दूसरा उपन्यास है। मध्यवर्गीय नारियों की अपनी दयनीय स्थितियों से उबरने की संघर्ष गाथा रेखांकित हुई है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय नारियों की जो अनेक समस्याएँ उठाई गई हैं उनमें सर्वप्रमुख समस्या विवाह की है। 'तट के बंधन' में मालती के विवाह के लिए 'क्लर्क, विद्यार्थी, व्यापारी, वकील, संपन्न जमींदार, युवक, प्रौढ़ सभी प्रकार के वर खोजे गए, परन्तु जैसे ही मालती अपने जीवन का महल उठाना शुरू करती, दहेज का दानव एक ही प्रहार में उसे निर्मूल कर देता। माता-पिता विवश है। कहाँ से लाएँ हजारों नकद, मोटर साइकिल, रेडियो, कैमरा, घड़ी अँगूठी, चाँदी के बर्तन, सोफासेट, ड्रेसिंग टेबल, कालीन...।"[6] अंततः मालती साहस से काम लेती है। लड़के को पत्र में सारी स्थिति स्पष्ट कर देती है। और मालती का विवाह

जैसे-तैसे हो जाता है।

एक दूसरी नारी शशि के माध्यम से विष्णु जी ने विवाह समस्या को एक-दूसरे ही कोण से प्रस्तुत किया है। शशि कस्बाई परिवेश में रहते हुए भी गजब की साहसी एवं निर्भीक है। माता-पिता विहीन होना भी उसके पांवों की बेड़ी नहीं बनता। यह समाज को चुनौती देते हुए एक दूसरी जाति के सुनील से अदालत में विवाह कर लेती है। मालती की माँ जो स्वयं अपनी बेटी के विवाह के लिए चिंतित है, क्रोध से बौखला कर कहती है, "क्या हिंदुओं की बहू-बेटियों को ऐसा करने की आज्ञा है।"[7] शशि के सगे भाई-भाभी उसे वेश्या तक कह देते हैं। 'तट के बंधन' में नीलम और सत्येंद्र की माँ के माध्यम से विधवा नारी के पुनर्विवाह की समस्या को भी उठाया है। नीलम की माँ पति की मृत्यु के पश्चात अपने पति के एक मुसलमान मित्र से विवाह कर लेती है। लेकिन हिंदू समाज से अपमान और उपेक्षा के अलावा उन्हें कुछ नहीं मिलता।

उपन्यास में नीलम की करुण-कथा अधिक दारुण है। एक तो वह अनिंद्य अति सुंदरी है, दूसरे समाज में ठुकराई गई नारी की पुत्री है। इसलिए उसे अपमानित करने का अधिकार उच्च वर्ग को वैसे ही प्राप्त है। एक मनचला युवक ने जब एक दिन उस से अभद्र व्यवहार किया तो हिंदू समाज के एक गणमान्य व्यक्ति ने कहा, "माँ वेश्या जैसी है। उसकी बेटी को किसी ने छेड़ दिया तो क्या अनर्थ हो गया। यह रूप आखिर किस काम आएगा।"[8] इसी नीलम का अपहरण हो जाता है। डाकू उसे उठा ले जाते हैं। वहाँ मारपीठ से लेकर बलात्कार तक की यातना उसे सहनी पड़ती है। सत्येंद्र के पत्र के उत्तर में नीलम आत्मविश्वास का परिचय देते हुए कहती है, "तुम्हारे पत्र मेरे जीवन का संबल बन गए हैं। विश्वास दिलाती हूँ कि, जानबुझकर जीवन का अपमान नहीं करूँगी।"[9]

'तट के बंधन', उपन्यास में मध्यवर्गीय नारियों की यह व्यथा कथा वास्तव में उतनी संघर्ष गाथा ही है, प्रत्येक नारी को किसी-न-किसी स्तर पर तो संघर्ष करना ही पड़ता है।

स्वप्नमयी : छायावादी शैली की लंबी कहानी

'स्वप्नमयी' में धर्म और जातिगत व्यवस्था के नाम पर हिंदू धर्म की यह परंपरागत व्यवस्था मौजूद है, जो नारी को घर के भीतर वैसे ही कसकर कैद कर देना चाहती है। जैसे पिंजरे में शुक को कैद कर दिया जाता है। इस उपन्यास की नायिका अलका भी पुरुष द्वारा पीड़ित है। यह बंगाली थी और उसका पति पंजाबी था। शादी के बाद उसे घर और बाहर के कार्य क्षेत्रों में संघर्ष करना पड़ता है। उसी अलका की मार्मिक कथा के

बारे में स्वयं विष्णु प्रभाकर कहते हैं, "यह एक ऐसी माँ की कहानी है जो नारी मुक्ति का स्वप्न तो देखती है, पर अंत में अपनी सास के चक्रव्यूह में फँस जाती है। इसलिए और फँस जाती है क्योंकि वह प्रयोग करने में विश्वास करती है। ऐसे पात्र कितने ही महान हों पर उनके लिए संसार में जगह नहीं है।"[10]

अलका वास्तव में रुढ़िग्रस्त परिवारों में महिलाओं की स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है। वह एक माँ है अपने बच्चे के लिए आदर्श भविष्य निर्माण करना चाहती है। उसके कुछ सपने हैं, जिसे यह साकार करना चाहती है। घर और बाहर के कर्तव्य निभाने का प्रयास करती है। लेकिन समाज की रुढ़ियाँ उसे असफल कर देती है। 'स्वप्नमयी' की अलका तो अपने बलिदान से अपना गला घोंट लेती है। वास्तव में अलका के बलिदान की कोई जस्टीफिकेशन नहीं दी जा सकती, यँह भी नहीं कि प्रतयेक 'स्वप्न' पूरा होने के लिए बलिदान चाहता है।

अर्द्धनारीश्वर : यौन शुचिता के प्रश्न से मुक्ति

'अर्द्धनारीश्वर' उपन्यास को लेखक ने तीन भागों में विभाजन किया है; व्यक्ति-मन, समाज-मन और अन्तर-मन। इस विभाजन के पीछे अपना उद्देश्य बताते हुए एक स्थान पर उन्होंने लिखा है, 'जब मनुष्य अपनी कहानी अपने-अपने शब्दों में कहता है तो उसका 'मैं' प्रबल रहता है। बहुत-सी बातें ऐसी भी होती हैं, जिन्हें वह दूसरों के साथ बाँट नहीं सकता। बलात्कार उनमें सबसे बड़ी समस्या है। सदियों के सामाजिक बंधन और रुढ़ियों ने नारी को इतना दुर्बल कर दिया है कि वह अपराधिनी न होकर भी स्वयं को अपराधिनी मान लेती है। 'व्यक्ति-मन' में उसी स्थिति का वर्णन है। लेकिन मैं इस बात को स्वीकार करना नहीं चाहता इसलिए 'समाज-मन-' में समाज के विरुद्ध विद्रोह की शक्ति पैदा करना चाहता हूँ। और मैंने यही किया है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति का एक अन्तर-मन भी होता है।

विष्णु का यह भी मानना है कि इस उपन्यास में वर्णित "यह घटनाएँ और ये पात्र सभी सच्चे हैं। केरल की नारी अभी भी उसी अवस्था में जी रही है। वह उस वर्ग का प्रतीक है जो हर स्थिति में जीने का साहस नहीं बटोर पाता। मुझे उस पर गुस्सा भी आता है और दया भी दूसरे भी संघर्ष कर रहे है, लेकिन हीन भावना से उबर चुके हैं।"[11]

विष्णु जी ने 'अर्द्धनारीश्वर' में यह प्रश्न भी उठाया है कि पश्चिम से जो आँधी आ रही है, उसके नशे से .... की नारी भी नहीं बच पाई है। वह कई पुरुषों को बरबस बाँधती है, नशा देकर उन्हें भोगलिप्त करती है। पुरुष में भी यौन शोषण का विकास

होता है। 'अर्द्धनारीश्वर' में मुख्य पात्र अजित का बहनोई अनित्य विवाह से पूर्व अपनी सगी भाभी की वासना का शिकार होता है। उसकी भाभी अपर्णा अपने पति के लंदन चले जाने के बाद अनित्य को मौका देखकर, अपने कमरे में बुलाकर फौरन द्वार बंद कर लेती है। फिर उसे खींचती हुई अपने पलंग पर ले जाती है और उसे उकसाते हुए कहती है, "मैं जानती हूँ पर मैं एक माह तक उस आग में धधकती नहीं रही सकती। कोई युवती नहीं रह सकती। इसलिए तुम्हें... ।"[12]

यौन शुचिता के प्रश्न को लेकर अजित और सुमिता के मन में निरंतर द्वंद्व मचा रहता है, जिसे वह कनखजूरे की तरह मज्जा में गाड़े रहते हैं। अजित श्यामला के प्रति जो आकृष्ट होता है, उसका कारण सुमिता के प्रति उसके मन में कोई उपेक्षा नहीं है। कामुक वृत्ति का भी कोई प्रश्न नहीं है। उसका कारण भी यही द्वंद्व है। 'अर्द्धनारीश्वर' में अजित और सुमिता, विभा, वर्तिका और नारायण की संपूर्ण चित्रित जीवन-चर्चा 'अर्द्धनारीश्वर' के इस रुपक को चरितार्थ करती प्रतीत होती है। इस प्रकार विष्णु प्रभाकर के यह महत्वपूर्ण उपन्यास सामाजिक जीवन का चित्रण करते हुए दिखाई देते हैं।

संदर्भ सूची

1. निशिकांत–विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ 61
2. वही, पृष्ठ 78
3. निशिकांत–विष्णु प्रभाकर दो शब्द, पृष्ठ 241
4. वही, पृष्ठ 08
5. निशिकांत–विष्णु प्रभाकार, पृष्ठ 07
6. तट के बंधन–विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ 16-17
7. वही, पृष्ठ 41
8. वही, पृष्ठ 39
9. वही, पृष्ठ 92
10. संकल्प–विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ 05
11. मेरे साक्षात्कार–विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ 327
12. अर्द्धनारीश्वर–विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ 130-31